अंतरा-शब्दशक्ति

ख्वाहिशें

(काव्य संग्रह)

अंजलि राकेश पंड्या

ख्वाहिशें

(काव्य सँग्रह)

श्रीमती अंजलि राकेश पंड्या

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-13-1

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © श्रीमती अंजलि राकेश पंड्या

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Khwahishen by Anjali pandya

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

मैं अंजलि राकेश पंड्या अपनी भावनाओं के निर्झर को साहित्य के सर्व रसों एवम् सभी विधाओ में प्रवाहित करने का प्रयास किया है। गृहसज्जा , सत्साहित्य, लेखनएवम् एक श्रोता होने के साथ- साथ सामाजिक, आर्थिक,नैतिक , पारिवारिक परिस्थितियों, छोटे बच्चों, वृद्धजनों एवम् उदास मन वाले व्यक्तियों के साथ समय व्यतीत करना, उनकी पीड़ा को सुनना , तनाव एवम् आपसी दूरियों से समाज के बदलते रिश्तों, आध्यात्म एवम् प्राकृतिक परिदृश्य को जन-जन के बीच साँझा करना मेरी रूचि व उद्देश्य हैं और **ख्वाहिशें** भी ।

मेरी इन ख्वाहिशों के निर्झर को मंजिल तक पहुँचाने का श्रेय राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान बनाने वाले मेरे साहित्य गुरु आदरणीय श्री नरेंद्रपाल जी जैन, ऋषभदेव को जाता है जिन्होंने सर्व रस एवं सभी विधाओं में करीब 2000 से अधिक रचनाएं लिखी। आदरणीय नरेंद्रपाल जी जैन के कठोर अनुशासन, निर्देशन एवम् मार्गदर्शन द्वारा नियमबद्ध लेखन सीखने की वजह से ही आज मैं थोड़ा - बहुत सीखकर अपनी पुस्तक **ख्वाहिशें** के माध्यम से आप पाठकगण के समक्ष हूँ।

आशा है कि इस अंक में ख्वाहिशें, ओढ़नी, कलम क्यों मुझसे रूठ गई, बूढ़ा बरगद, मन के झरोखे, खुशियाँ खरीद लूँ दामन भर, जिंदगी की शाम, शब्दों को हारते देखा, सीप, आज सह जाने दो, ज्वार-भाटा, हाँ मैं बहू हूँ आदि शीर्षकों से प्रकाशित मेरी ये रचनाएँ पढ़कर आप सभी का आशीष मिलेगा।

अंजलि राकेश पंड्या

अनुक्रमणिका

1. ख्वाहिशें	5
2. ओढ़नी	6
3. कलम क्यूँ मुझसे रूठ गई	7
4. बूढ़ा बरगद	8
5. मन के झरोखे	9
6. खुशियाँ खरीद लूँ दामन भर	10
7. जिंदगी की शाम	11
8. शब्दों को हारते देखा हैं	12
9. आज सह जाने दो	13
10.ज्वार भाटा	14
11.हाँ मैं बहू हूँ	15
12.सीप	16

ख्वाहिशें

रेत - सी
ख्वाहिशों
के टीलों पर
दुःखता दिल
कदम दर कदम
चलते थकते पाँव
मुश्किलों भरे
रेगिस्तानी सफर में भी
मृगमरीचिका भरा
अपना सारा
संसार लिख जाऊँ ......

गिरती, लडखडाती आस
मृग कस्तूरी-सी प्यास
बनते, टूटते हौसले
हैरानी भरी
इस जिंदगी से
नए शब्द चुन-चुनकर
किस्से वही
बार - बार लिख जाऊँ .....

सुनहरे सागर में
उम्मीदों की नैया को
अधुरे अरमानों की
पतवार से खेती जाऊँ
मैं वेदना अपनी या मिलन की
झनकार लिख जाऊँ ......||

ओढ़नी

झिलमिल - झिलमिल
यूँ न इतराओं
ऐ नील गगन में
चमकते सितारों ।
अंगडाई लेगी जब
बादलों की काली घटाएँ
तब तुम्हें भी ओढ़नी होगी
अंधेर की ओढ़नी ......।

गुन - गुन, गुन - गुन
इतना न गुनगुनाओं
ए गुंजित भँवरों !
गुजर जाएगा जब
बहारों का मौसम
मुरझा जाएगें सब फूल
तब तुम्हे भी ओढ़नी होगी
खामोशी की ओढ़नी ......।

सर - सर, सर - सर
इतना न लहराओं
ए बसंती पत्तों !
पतझड़ जब
मेहमां बन आएगा
तब तुम्हें भी ओढ़नी होगी
जुइाई की ओढ़नी ......।।

कलम क्यूँ मुझसे रूठ गई

उर सराबोर हुआ
अंध - बंधन से
ओढ़ ली चादर
कलुष, भेद की
प्रेम भाव की
ज्योति हर
फैलाकर छाया
तमस निशा की
कलम क्यूँ मुझसे तू रूठ गई .....

मैं ज्ञानहीन
बस ध्यानहीन
निज स्वार्थ के पाश ने
जकड़ लिया
तोड न पाई
ये कच्चे तार
मन ही मन मैं बस टूट गई .....

मुक्त पवन संग
उड़ती गई
हृदय बन गया
मोह-माया का महल
मौन वाणी ने
कर लिया निवास
क्यूँ लिखने की आदत छूट गई ....||

बूढ़ा बरगद

थकी आँखों से
अश्रुधन खोकर
उर में माया, ममता भरकर
घर आँगन के कोनों में
अनवरत ताने सहकर
तिरस्कृत- सा
अनचाहा- सा
बस बूढ़ा बरगद खड़ा रहा ....।

नव कलियों से
सुवास लेकर
सूरज की किरणों में तपकर
दुपहरी की धूप में छांव फैलाकर
वृद्धावस्था की हाय लेकर
अनदेखा - सा, अनकहा - सा
दर्द पीकर भी
बस बूढ़ा बरगद खडा रहा ....।

एकान्त, शान्ति को
उपहार मानकर
स्वयं के अस्तित्व को मिटाकर
यौवन के ख्वाब, सजाकर
काल को भी जीतकर
स्वजनों से चेतना पाने
बस बूढ़ा बरगद खडा रहा ....।
बस बूढ़ा बरगद खडा रहा ....।।

मन के झरोखे

इन यादों की
हंसी वादियों को
मन के झरोखे में
बस जाने दो,
अपनेपन की
ये बरखा, बूंद - बूंद बरस जाने दो ....

प्रीत की
प्रगाढ़ता को
नयनों से ही
झर जाने दो,
ख्वाबों के, हौसलों को
कुछ यूँ ही बहक जाने दो ....

अनदेखे धागों में
मत बांधो इन्हें
मेरी भावनाओं को
बह जाने दो,
समन्दर से गहरे
सफर में कश्ती मेरी डूब जाने दो,.....

न कभी मिलें
किनारा गर
बस यूँ ही मुझे
तरस जाने दो .... ।।

खुशियाँ खरीद लूँ दामन भर

सुनहरी भोर में अल्हड़-सी
बादलों की ओट में छुप-छुप
माँ-पापा की गोद में बेटी बन,
जी सकूं मैं जी भरकर
ऐसे ख्वाबों के बाजार से
खुशियाँ खरीद लूं दामन भर ....
अधखुले नयनों से सूर्योदय देख
प्रीत और लज्जा का
सिंदूरी श्रृंगार कर पिया संग,
कान्हा की राधिका बन,
जी सकूँ मैं जी भरकर
ऐसे ख्वाबों के बाजार में
खुशियाँ खरीद लूं दामर भर ....
बच्चों की, किल्लोलों संग
एक बार फिर
मेरा छूटा बचपन
जी सकू मैं,जी भरकर
ऐसे ख्वाबों के बाजार में
खुशियाँ खरीद लूं दामन भर ....
नेह के धागों में, श्रृद्धा समर्पण
और विश्वास के
मोती पिरोकर, हमसफर संग
रूक्षमणी बन,
जी सकूं में जी भरकर
ऐसे ख्वाबों के बाजार से
खुशियाँ खरीद लूं दामन भर .... ।।

जिंदगी की शाम

हर सुबह
उमंग भरी
थिरकती
और लहराती
मौज मस्ती से
सराबोर है
फिर भी न जाने क्यों
जिंदगी की शाम उदास है ......

हर सुबह
नव पल्लव और कलियाँ
महकते खुशनुमा
ख्वाब से
भँवरों की
मधुर गुंजार हैं
फिर भी न जाने क्यों
जिंदगी की हर शाम उदास है....

हर नई सुबह
हौसला देती
थामे हाथ
मेरे हम सफर का
बच्चों के, आलीशान
आशियाने में हैं
फिर भी न जाने क्यों
जिंदगी की शाम उदास है ....।।

शब्दों को हारते देखा हैं

आधुनिकता के
नाम पर संस्कारों को
लुप्त होते देखा,
बंधनों को टूटते देखा
रिश्तों से अपनो को
मुँह मोड़ते देखा,
घरोंदो को मकां
बनते देखा
सच आज
मैंने एक बार फिर
शब्दों को हारते देखा हैं ....

बुजुर्गो को
वृद्धाश्रम जाते देखा,
गिरते जीवन मूल्यों को
आईने में
निहारते देखा,
जानते हुए
अनजान बनते देखा
सज आज
मैंने एक बार फिर
मौन को जीतते और
शब्दों को हारते देखा हैं ....।।

आज सह जाने दो

सीमाएँ
सब टूट जाने से
अपनों के पराए
हो जाने पर
मन के भावों
आँखों के निर्झर से
आज बह जाने दो ।
यादों के दर्पण को
बंधनों में बंधे
रिश्तों को
जुबां से
आज कह जाने दो ।
नयनों की
भाषा से
सजाए
सपनों भरे
इस घरोंदे को
आज ढह जाने दो ।
अब न संवारों
इन बिखरी
खुशियों को
आसमां से
जमीं पर
आ बैठे हैं
बस
आज सह जाने दो।।

ज्वार भाटा

गमों के सागर में
लहरें उठती रही
वक्त की नजाकत समझ
साहिल से टकरा गई
साहिल से टकरा गई ।

यादों की बयार
उठी आसमां की ओर
डरी सहमी-सी
क्षितिज से मिल घबरा गई ।

दगाबाज कोहरे ने
ढँक लिया अरमानों को
सजा तेरे इल्जामों की
खामोशी में गहरा गई ।

बेबस धड़कनें
धड़कती रही तन्हाई में भी
अन्तस् में हिलोरे
उफनती रही
ज्वार भाटा बनकर ।।

हाँ मैं बहू हूँ

हाँ - हाँ मैं वही बहू हूँ,
जो अपने मायके की
स्मृतियों को जगाए रख
अपने अस्तित्व के बीज को
अंकुरित करने वाली
माटी से जुदा होकर
संवेदनशीलता, त्याग, तपस्या
और प्रेमभाव की
फसल लहलहाने का
हौसला रखती हूँ,
हाँ मैं वही बहू हूँ,
हाँ - हाँ मैं वही बहू हूँ।
दुःख, दर्द, सेवा, सुश्रुशा
सम्बलन और अपनेपन का
अहसास सिर्फ
बेटी बनकर ही जता सकते हैं
और इसके विपरितार्थ ही
बहू की परिभाषा होती हैं
बरसों चुभती
इस वेदना का समाधान
मुझे मेरी महकती
बगिया के प्रफुल्लित
सन्तुष्ट और आशीर्वाद देते
उस माली की भावनाओं को
देखकर हुआ जिसने
बहू - सा लाड दिया
आज मुझे गर्व हैं
कि मैं उस घर की बहू हूँ।
हाँ में बहू हूँ,
हाँ - हाँ मैं वही बहू हूँ।।

सीप

मैं सीप
सागर के खारे पानी में
इठलाती, बलखाती
स्वाति नक्षत्र की
बूंद को समाहित करती
वक्त की मार सहकर
बाधाओं, को पार कर
दिन-रात
यायावर - सी
दवाओं, दुआओं
और सौंदर्य हेतु
मुक्ता, माणिक दे
हर मन को
उल्लासित करती
गर्भ की, पीड़ा सहती
कच्चे, पक्के
मोतियों को पालती
धरा को
रत्न गर्भा का
दर्जा दिलवाती
पर माँ नही कहलाती
मेरी व्यथा
ही मेरी कथा हैं
मैं भी माँ हूँ,
मैं भी माँ हूँ,
यही सोच
मुझे उत्साहित करती ।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- श्रीमती अंजलि राकेश पंड्या
पति	- श्री राकेश पंड्या
जन्म	- 21.02.1977
शिक्षा	- स्नातकोत्तर (हिन्दी), एस.टी.सी.
पता	- मु.व पो. कनबा, ब्लाक- बिछीवाड़ा, जिला - डूंगरपुर (राज.) 314804
मो.नं.	- 9799200505
संप्रति	- शिक्षिका (अनुभव 22 वर्ष)

साहित्यिक गतिविधियाँ

1. पत्र-पत्रिकाओं के लिए आर्टिकल, कहानी, गद्य , कहानी आदि लेखन ।
2. मुक्तक, गीत, ग़ज़ल एवं कविता लेखन ।
3. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन ।
4. विभागीय साहित्यिक प्रतियोगिताओं में भाग लेना ।
5. विभिन्न अवसरों पर मंच संचालन ।
6. कवि सम्मेलन एवं काव्य गोष्ठियों में काव्य पाठ करना ।

सम्मान

1. समस्त ब्रह्म समाज ट्रस्ट अहमदाबाद (गुजरात) द्वारा साहित्यिक एवं शैक्षिक उपलब्धियों हेतु सम्मानित।
2. राजस्थान पत्रिका, वागड़ विभा एवं भारत विकास परिषद डूंगरपुर (राजस्थान) द्वारा हिन्दी दिवस पर सम्मानित।
3. श्री वृहद भट्ट मेवाड़ा युवा समाज बांसवाड़ा - डूंगरपुर द्वारा सम्मानित ।
4. राष्ट्रीय ब्राह्मण सम्मान समारोह एवं विशाल सम्मेलन भीलवाड़ा में सम्मानित 20.05.2018 ।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-05-6
मूल्य- 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com